International Journal of Financial Management and Economics

P-ISSN: 2617-9210
E-ISSN: 2617-9229
IJFME 2022; 5(1): 140-148
Received: 22-01-2022
Accepted: 28-02-2022

डॉ. श्रवणराज
सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, जय नारायण व्यास विश्विद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. श्रवणराज
सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, जय नारायण व्यास विश्विद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

भारत में कृषि विकास की स्थिति का आर्थिक अध्ययन

डॉ. श्रवणराज

DOI: https://doi.org/10.33545/26179210.2022.v5.i1.333

सारांश
भारत में कृषि का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह देश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। लगभग 60% भारतीय जनसंख्या कृषि पर निर्भर है और यह देश की खाद्य सुरक्षा, रोजगार और आर्थिक विकास का प्रमुख स्रोत है। वर्तमान में भारतीय कृषि कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जैसे भूमि की उर्वरता में कमी, जलवायु परिवर्तन, अपर्याप्त सिंचाई व्यवस्था, उन्नत कृषि तकनीकों का अभाव और किसानों की आर्थिक स्थिति। इसके बावजूद, सरकार की विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि क्षेत्र को सुदृढ़ करने के प्रयास जारी हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना और उसमें सुधार के संभावित उपायों का प्रस्ताव करना है। यह अध्ययन विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है और इसका मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान के लिए नीतिगत सिफारिशें प्रदान करना है।

कुटशब्द: कृषि, जलवायु परिवर्तन, सिंचाई, आर्थिक विकास, सरकारी योजनाएँ

प्रस्तावना
भारत में कृषि का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह देश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। लगभग 60% भारतीय जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, और यह देश की खाद्य सुरक्षा, रोजगार और आर्थिक विकास का प्रमुख स्रोत है। कृषि न केवल भोजन और आजीविका का स्रोत है, बल्कि इसका योगदान औद्योगिक विकास और निर्यात में भी महत्वपूर्ण है। भारतीय कृषि का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य देखें तो यह सदियों से भारतीय समाज और संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। हरित क्रांति के माध्यम से कृषि ने देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और कृषि उत्पादन में वृद्धि की है।

वर्तमान में भारतीय कृषि कई चुनौतियों का सामना कर रही है। भूमि की उर्वरता में कमी, जलवायु परिवर्तन, अपर्याप्त सिंचाई व्यवस्था, उन्नत कृषि

तकनीकों का अभाव और किसानों की आर्थिक स्थिति जैसी समस्याएँ प्रमुख हैं। इसके अलावा, प्राकृतिक आपदाएँ, पानी की कमी, और बाजार में मूल्य स्थिरता का अभाव भी किसानों के लिए बड़ी चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों के बावजूद, सरकार की विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि क्षेत्र को सुदृढ़ करने के प्रयास जारी हैं। उदाहरण के लिए, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, और मृदा स्वास्थ्य कार्ड जैसी योजनाएँ किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारने और कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक साबित हो रही हैं।

इस शोध का उद्देश्य भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना और उसमें सुधार के संभावित उपायों का प्रस्ताव करना है। यह अध्ययन विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है और इसका मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान के लिए नीतिगत सिफारिशें प्रदान करना है। जैसा कि एक विद्वान कहते हैं, कृषि का विकास किसी भी राष्ट्र की प्रगति का मूलभूत आधार होता है । इस प्रकार, कृषि का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान न केवल महत्वपूर्ण है, बल्कि इसे सुदृढ़ करने के लिए निरंतर प्रयास भी आवश्यक हैं।

शोध के उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना और उसमें सुधार के संभावित उपायों का प्रस्ताव करना है। यह अध्ययन विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है। इसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. भारतीय कृषि के विकास की वर्तमान स्थिति और चुनौतियों का विश्लेषण करना।
2. भूमि उर्वरता, जलवायु परिवर्तन, सिंचाई व्यवस्था, और उन्नत कृषि तकनीकों के अभाव जैसे मुद्दों का अध्ययन करना।
3. किसानों की आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन करना और उनके जीवन स्तर में सुधार के उपाय सुझाना।
4. सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में लागू की जा रही विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
5. कृषि क्षेत्र में नवाचार और तकनीकी उन्नति को प्रोत्साहित करने के लिए नीतिगत सिफारिशें प्रदान करना।

साहित्य समीक्षा

भारतीय कृषि के विकास और चुनौतियों पर कई शोध कार्य किए गए हैं, जिनसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले गए हैं। पूर्व के शोधों में, प्रमुख रूप से हरित क्रांति के प्रभाव और इसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में वृद्धि पर ध्यान केंद्रित किया गया है। सिंह (2018) के अनुसार, हरित क्रांति ने भारतीय कृषि को नई दिशा दी, जिससे खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि हुई और देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई। इसके अतिरिक्त, शर्मा और मिश्रा (2020) ने अपने अध्ययन में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का विश्लेषण किया और पाया कि तापमान में वृद्धि और वर्षा पैटर्न में परिवर्तन ने कृषि उत्पादन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है।

प्रमुख निष्कर्षों में यह भी पाया गया है कि कृषि क्षेत्र में उन्नत तकनीकों का समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है। गुप्ता (2019) के अनुसार, उन्नत कृषि तकनीकों और जैविक खेती के तरीकों को अपनाने से न केवल उत्पादन में वृद्धि हो सकती है, बल्कि मिट्टी की उर्वरता भी बनाए रखी जा सकती है। इसके अलावा, किसानों की आर्थिक स्थिति पर भी व्यापक शोध हुआ है। राजन (2021) ने अपने अध्ययन में दर्शाया कि किसानों की आर्थिक तंगी और ऋणग्रस्तता के कारण आत्महत्याओं की संख्या बढ़ी है, जिससे कृषि क्षेत्र में गंभीर संकट उत्पन्न हुआ है।

इन अध्ययनों के बावजूद, वर्तमान शोध में कुछ महत्वपूर्ण अंतर पाए जाते हैं। सबसे पहले, विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन पूर्ण रूप से नहीं किया गया है। दूसरा, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं के दीर्घकालिक प्रभावों का विस्तृत अध्ययन अभी भी आवश्यक है। तीसरा, कृषि में निवेश और वित्तीय सहायता के प्रभावों का समग्र विश्लेषण भी अभी तक अधूरा है। इस शोध की आवश्यकता इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति का व्यापक विश्लेषण करेगा और उसमें सुधार के संभावित उपायों का प्रस्ताव करेगा। इसके साथ ही, यह अध्ययन सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करेगा और नीतिगत सिफारिशें प्रदान करेगा, जिससे कृषि क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने में सहायता मिल सकेगी।

शोध कार्यप्रणाली

इस शोध कार्य में भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति का व्यापक विश्लेषण करने के लिए द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया जाता है। द्वितीयक स्रोतों में सरकारी रिपोर्टें, कृषि विभाग की वार्षिक रिपोर्टें, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO) के आँकड़े, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की रिपोर्टें, और विश्व बैंक तथा FAO जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टें शामिल हैं। इसके अलावा, विभिन्न शोध पत्रिकाओं, सम्मेलन पत्रों, और समाचार लेखों से भी संबंधित जानकारी संकलित की जाती है। डेटा संग्रह की विधियाँ सरकारी रिपोर्टों, प्रतिष्ठित पत्रिकाओं, ऑनलाइन डेटाबेस, और समाचार पत्रों से डेटा संकलन पर आधारित हैं। डेटा विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी, रुझान विश्लेषण, कारण-परिणाम विश्लेषण, और सापेक्ष विश्लेषण जैसी विधियों का उपयोग किया जाता है। वर्णनात्मक सांख्यिकी से औसत, मानक विचलन, और प्रतिशत का उपयोग कर मूल स्थिति को समझा जाता है, जबकि रुझान विश्लेषण से समय के साथ कृषि क्षेत्र में हुए परिवर्तनों को समझा जाता है। कारण-परिणाम विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न कारकों के बीच संबंधों का विश्लेषण किया जाता है और सापेक्ष विश्लेषण से विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में कृषि उत्पादन की तुलना की जाती है। इन विधियों के उपयोग से एकत्रित और विश्लेषित डेटा के आधार पर भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति और उसमें सुधार के संभावित उपायों का प्रस्ताव किया जाता है।

कृषि विकास के प्रमुख घटक

सिंचाई और जल प्रबंधन कृषि विकास के महत्वपूर्ण घटक हैं। भारतीय कृषि में सिंचाई का मुख्य स्रोत नहरें, बोरवेल, और ट्यूबवेल हैं। राष्ट्रीय जल विकास एजेंसी (NWDA) की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में कुल कृषि भूमि का लगभग 40% सिंचित है, जबकि शेष वर्षा आधारित कृषि पर निर्भर है। जलवायु परिवर्तन और अनियमित वर्षा के कारण जल प्रबंधन की आवश्यकता और बढ़ गई है। 2018-2019 के कृषि सांख्यिकी के अनुसार, राज्यों जैसे पंजाब और हरियाणा में सिंचाई सुविधाओं का उच्च स्तर है, जबकि बिहार और पश्चिम बंगाल में यह अपेक्षाकृत कम है। जल प्रबंधन के लिए ड्रिप इरिगेशन और स्प्रिंकलर इरिगेशन जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग बढ़ रहा है, जिससे जल की बचत और उत्पादन में वृद्धि हो रही है।

उर्वरक और कीटनाशक उपयोग भी कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय कृषि में उर्वरकों का उपयोग 1960 के दशक की हरित क्रांति के बाद तेजी से बढ़ता है। 2018-2019 की कृषि सांख्यिकी के अनुसार, भारत में प्रति हेक्टेयर उर्वरक उपयोग का औसत 135 किलोग्राम है, जबकि पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में यह आंकड़ा 200 किलोग्राम से अधिक है। उर्वरकों के अत्यधिक

उपयोग से मृदा की उर्वरता में कमी और पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। सरकार द्वारा मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना लागू की जाती है, जो किसानों को उनके खेतों की मृदा गुणवत्ता के अनुसार उर्वरक उपयोग की सलाह देती है। कीटनाशकों का उपयोग भी बढ़ रहा है, जिससे फसलों की पैदावार में वृद्धि होती है, लेकिन इसके साथ ही पर्यावरण और स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

बीज और फसल प्रबंधन के अंतर्गत उन्नत बीजों का उपयोग और बेहतर फसल प्रबंधन तकनीकों का समावेश होता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की रिपोर्ट के अनुसार, उन्नत बीजों का उपयोग करने से उत्पादन में 20-25% की वृद्धि हो सकती है। बीज निगम और निजी कंपनियां उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की आपूर्ति करती हैं, जो विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में उपयुक्त होते हैं। फसल प्रबंधन में रोटेशन, मल्चिंग, और जैविक खेती जैसी तकनीकों का उपयोग बढ़ रहा है, जिससे मृदा की उर्वरता और उत्पादकता बनी रहती है। 2018-2019 की रिपोर्ट के अनुसार, बीज दर में वृद्धि और फसल प्रबंधन तकनीकों के सुधार से धान, गेहूं, और दलहन फसलों की पैदावार में वृद्धि हो रही है।

कृषि यंत्र और तकनीकी प्रगति भी कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय कृषि में ट्रैक्टर, थ्रेशर, और हार्वेस्टर जैसी मशीनों का उपयोग बढ़ रहा है। कृषि मंत्रालय की 2019-2020 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 5 लाख ट्रैक्टर हर साल बिकते हैं। मशीनों के उपयोग से कृषि कार्यों की गति और दक्षता में वृद्धि हो रही है, जिससे उत्पादन लागत में कमी और उत्पादकता में वृद्धि हो रही है। तकनीकी प्रगति के अंतर्गत सटीक खेती, सेंसर, ड्रोन, और जीआईएस तकनीकों का उपयोग हो रहा है, जिससे कृषि कार्यों की निगरानी और प्रबंधन में सुधार हो रहा है। तकनीकी प्रगति से किसानों को उनकी फसलों के स्वास्थ्य, मृदा की गुणवत्ता, और जल प्रबंधन के बारे में सटीक जानकारी मिल रही है, जिससे वे बेहतर निर्णय ले सकते हैं और उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं।

भारतीय कृषि के विभिन्न घटकों का विश्लेषण (स्रोत: विभिन्न संदर्भ)

घटक	राज्य	सिंचित भूमि (%)	प्रमुख सिंचाई स्रोत	जल प्रबंधन तकनीक	उर्वरक उपयोग (किग्रा/हेक्टेयर)	प्रमुख उर्वरक	कीटनाशक उपयोग	पर्यावरणीय प्रभाव	उन्नत बीज उपयोग (%)	प्रमुख फसलें	फसल प्रबंधन तकनीक	उत्पादन वृद्धि (%)	ट्रैक्टर उपयोग (प्रति 1000 किसान)	प्रमुख कृषि यंत्र	तकनीकी प्रगति	उत्पादकता वृद्धि (%)
सिंचाई और जल प्रबंधन	पंजाब	98	नहर, ट्यूबवेल	ड्रिप इरिगेशन, स्प्रिंकलर	213	NPK	अधिक	जल प्रदूषण	90	गेहूं, धान	रोटेशन, मल्चिंग	30	75	ट्रैक्टर, थ्रेशर	सटीक खेती, ड्रोन	40
	हरियाणा	95	नहर, ट्यूबवेल	ड्रिप इरिगेशन, स्प्रिंकलर	206	NPK	अधिक	मृदा उर्वरता में कमी	85	गेहूं, धान	रोटेशन, मल्चिंग	28	70	ट्रैक्टर, हार्वेस्टर	सटीक खेती, सेंसर	38
	बिहार	63	नहर, बोरवेल	पारंपरिक तकनीक	94	NPK, यूरिया	मध्यम	जल प्रदूषण	60	धान, मक्का	जैविक खेती, रोटेशन	20	35	ट्रैक्टर, पावर टिलर	पारंपरिक तकनीक	25
	पश्चिम बंगाल	45	नहर, बोरवेल	पारंपरिक तकनीक	68	NPK, यूरिया	कम	मृदा उर्वरता बनाए रखना	55	धान, सब्जियाँ	जैविक खेती, रोटेशन	18	30	ट्रैक्टर, पावर टिलर	पारंपरिक तकनीक	22

राज्यवार प्रमुख सिंचाई स्रोतों का विवरण (स्रोत: विभिन्न संदर्भ)

राज्य	नहर (%)	ट्यूबवेल (%)	बोरवेल (%)	अन्य (%)
पंजाब	60	30	8	2
हरियाणा	55	35	7	3
बिहार	40	25	30	5
पश्चिम बंगाल	35	20	40	5

बीज और फसल प्रबंधन तकनीकों का राज्यवार विवरण (स्रोत: विभिन्न संदर्भ)

राज्य	रोटेशन (%)	मल्चिंग (%)	जैविक खेती (%)	अन्य (%)
पंजाब	70	20	5	5
हरियाणा	65	25	5	5
बिहार	50	20	25	5
पश्चिम बंगाल	45	15	35	5

नीतियाँ और कार्यक्रम

राष्ट्रीय कृषि नीति का उद्देश्य देश में कृषि के सतत और समावेशी विकास को सुनिश्चित करना है। इस नीति में खाद्य सुरक्षा, किसानों की आय में वृद्धि, और कृषि क्षेत्र की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कई उपाय शामिल हैं। राष्ट्रीय कृषि नीति, 2000 में लागू की गई थी, जिसमें उन्नत कृषि तकनीकों का प्रोत्साहन, जल संसाधनों का समुचित उपयोग, और कृषि विपणन सुधार जैसे प्रमुख बिंदु शामिल हैं। सरकार द्वारा समय-समय पर इसमें आवश्यक संशोधन किए जाते हैं ताकि बदलती परिस्थितियों के अनुसार इसे और प्रभावी बनाया जा सके।

प्रमुख सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना (PM-KISAN) शामिल है, जिसके तहत किसानों को प्रतिवर्ष 6,000 रुपये की आर्थिक सहायता दी जाती है। यह योजना किसानों की आय में स्थिरता लाने और कृषि निवेश को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 2019 में शुरू की गई है। इसके अलावा, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) किसानों को प्राकृतिक आपदाओं, कीटों और बीमारियों से फसल नुकसान के खिलाफ बीमा कवर प्रदान करती है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना भी एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, जो किसानों को उनके खेतों की मृदा गुणवत्ता के आधार पर उर्वरकों के उपयोग की सलाह देती है। इसके अतिरिक्त, पर ड्रॉप मोर क्रॉप योजना के तहत सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों का प्रचार-प्रसार किया जाता है ताकि जल संसाधनों का अधिकतम उपयोग हो सके और जल की बर्बादी रोकी जा सके।

कृषि सुधारों में 2020 में लागू किए गए कृषि कानून प्रमुख हैं, जिनका उद्देश्य कृषि विपणन प्रणाली को सुधारना और किसानों को अपनी उपज सीधे बाजार में बेचने की स्वतंत्रता प्रदान करना है। इन कानूनों के तहत किसान अपने उत्पादों को राज्यों के बाहर भी बेच सकते हैं, जिससे उन्हें बेहतर मूल्य मिल सकते हैं। हालांकि, इन कानूनों का विरोध भी होता है और अंततः सरकार को इन्हें वापस लेना पड़ता है। इन सुधारों से यदि ठीक से लागू होते तो कृषि विपणन प्रणाली में पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धा बढ़ सकती थी, जिससे किसानों को लाभ होता। इन सुधारों की प्रभावशीलता पर विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है ताकि भविष्य में कृषि नीति को और अधिक कारगर बनाया जा सके।

कृषि में वर्तमान चुनौतियाँ

भारतीय कृषि वर्तमान में कई चुनौतियों का सामना कर रही है। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है। मौसम विभाग और पर्यावरण अध्ययन के डेटा के अनुसार, बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा, और बार-बार आने वाली सूखा और बाढ़ जैसी घटनाएँ फसल उत्पादन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर रही हैं। तापमान में वृद्धि के कारण फसलों की पैदावार में कमी और फसल चक्र में बदलाव देखने को मिल रहा है। इससे किसानों की आय में कमी आती है और कृषि उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

भूमि उपयोग और कृषि भूमि का क्षरण भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। भूवैज्ञानिक सर्वे और विभिन्न रिपोर्ट्स के अनुसार, बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के कारण कृषि भूमि का गैर-कृषि उपयोग में परिवर्तन हो रहा है। इसके अलावा, अत्यधिक उर्वरक और कीटनाशकों के उपयोग से भूमि की उर्वरता में कमी आ रही है। भूमि क्षरण के कारण मृदा की गुणवत्ता घट रही है, जिससे कृषि उत्पादन में गिरावट हो रही है। मृदा क्षरण और जलवायु परिवर्तन के संयुक्त प्रभाव से कृषि भूमि की स्थिति और भी खराब हो रही है। किसान आत्महत्याएँ और आर्थिक संकट भी भारतीय कृषि के लिए एक बड़ी चुनौती है। सरकारी रिपोर्ट्स और समाचार लेखों के अनुसार, किसानों की आर्थिक तंगी, ऋणग्रस्तता, और फसल की असफलता के कारण आत्महत्याओं की घटनाएँ बढ़ रही हैं। किसानों को फसल के उचित मूल्य नहीं मिल पाते और वे अक्सर बाजार के उतार-चढ़ाव के शिकार हो जाते हैं। कृषि निवेश में कमी, ऋण की उच्च ब्याज दरें, और आर्थिक असुरक्षा किसानों के जीवन को प्रभावित कर रही हैं।

विपणन और मूल्य स्थिरता की समस्या भी गंभीर है। व्यापार और उद्योग संगठनों के डेटा के अनुसार, कृषि उत्पादों के मूल्य में अस्थिरता और बाजार में उचित मूल्य न मिलने के कारण किसान आर्थिक संकट में हैं। फसलों की कीमतों में अनियमितता, बिचौलियों का हस्तक्षेप, और अपर्याप्त भंडारण सुविधाओं के कारण किसानों को उनके उत्पाद का सही मूल्य नहीं मिल पाता। इससे किसानों की आय में कमी होती है और वे अपनी आजीविका बनाए रखने में असमर्थ होते हैं।

(https://tractorgyan.com/tractor-industry-news-blogs/450/the-five-biggest-agricultural-problems-and-their-solutions-in-india)

भारतीय किसानों की 5 मुख्य कृषि समस्याएं और उनके समाधान

आर्थिक विश्लेषण

भारतीय कृषि का आर्थिक विश्लेषण करते समय हमें कृषि उत्पादन, निर्यात और आयात, निवेश और वित्तीय सहायता, और कृषि ऋण और सब्सिडी पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यह विश्लेषण सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों के डेटा पर आधारित है, जिससे भारतीय कृषि की व्यापक स्थिति का आकलन किया जा सकता है। भारतीय कृषि उत्पादन में प्रमुख फसलें जैसे गेहूं, धान, गन्ना, और दलहन शामिल हैं। कृषि मंत्रालय की 2019-2020 की रिपोर्ट के अनुसार, धान का उत्पादन 118 मिलियन टन, गेहूं का 107 मिलियन टन, और गन्ना का 370 मिलियन टन है। हालांकि, उत्पादन में वृद्धि हो रही है, लेकिन इसकी दर कृषि योग्य भूमि की कमी और जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हो रही है। गैर-सरकारी संस्थान जैसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) द्वारा उन्नत बीज और तकनीकों के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे किसानों को लाभ हो रहा है।

व्यापार रिपोर्ट्स और सांख्यिकी डेटा के अनुसार, भारत कृषि निर्यात में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 2019-2020 में, कृषि उत्पादों का कुल निर्यात लगभग 38 बिलियन डॉलर था, जिसमें चावल, मसाले, और तिलहन प्रमुख थे। दूसरी ओर, कृषि आयात में तिलहन, दालें, और खाद्य तेल शामिल हैं, जिनकी कुल आयात लागत लगभग 20 बिलियन डॉलर है। निर्यात और आयात में असंतुलन के कारण देश को विदेशी मुद्रा की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों के निर्यात से किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्त होते हैं। कृषि में निवेश और वित्तीय सहायता भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। केंद्रीय बजट 2020-2021 में कृषि और संबंधित क्षेत्रों के लिए 1.6 लाख करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जिसमें कृषि बुनियादी ढांचा कोष, किसान रेल योजना, और हर खेत को पानी योजना जैसी पहलें शामिल हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य कृषि क्षेत्र में बुनियादी ढांचे का विकास करना और किसानों को आधुनिक सुविधाएँ प्रदान करना है। वित्तीय सहायता के माध्यम से किसानों को उनकी उपज की गुणवत्ता और मात्रा में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। कृषि ऋण और सब्सिडी भी भारतीय कृषि के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) और नाबार्ड द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट्स के अनुसार, 2019-2020 में कृषि ऋण वितरण का कुल आंकड़ा 13.5 लाख करोड़ रुपये है। सरकार द्वारा किसानों को रियायती दरों पर ऋण प्रदान किया जाता है, जिससे उन्हें फसल उत्पादन और अन्य कृषि गतिविधियों के लिए आवश्यक वित्तीय सहायता मिलती है। इसके अलावा, उर्वरक सब्सिडी, बीज सब्सिडी, और बिजली सब्सिडी जैसी योजनाओं के माध्यम से किसानों को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जा रहा है, जिससे उनकी उत्पादन लागत में कमी आती है और वे अधिक लाभ कमा सकते हैं। कुल मिलाकर, भारतीय कृषि का आर्थिक विश्लेषण दर्शाता है कि सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा की गई विभिन्न पहलों के माध्यम से कृषि उत्पादन, निर्यात, निवेश, और ऋण में सुधार हो रहा है, लेकिन भूमि क्षरण, जलवायु परिवर्तन, और बाजार अस्थिरता जैसी चुनौतियों का समाधान अभी भी आवश्यक है।

निष्कर्ष और सिफारिशें

भारतीय कृषि के आर्थिक विश्लेषण से कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलते हैं। प्रमुख फसलों का उत्पादन बढ़ेगा, लेकिन जलवायु परिवर्तन और भूमि क्षरण के कारण यह वृद्धि अस्थिर हो सकती है। किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए विभिन्न सरकारी योजनाएँ लागू की जाएंगी, जैसे प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना। इन योजनाओं के

माध्यम से किसानों को कुछ हद तक आर्थिक सुरक्षा प्रदान की जाएगी, लेकिन उनकी प्रभावशीलता में सुधार की आवश्यकता होगी। कृषि में उन्नत तकनीकों और यंत्रों का उपयोग बढ़ेगा, जिससे उत्पादकता में वृद्धि होगी, लेकिन इसका लाभ सभी किसानों तक समान रूप से नहीं पहुंच सकता है। सुधार के लिए कुछ सिफारिशें की जा सकती हैं। सबसे पहले, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए उन्नत जल प्रबंधन तकनीकों और सूखा-प्रतिरोधी फसलों के विकास को प्राथमिकता दी जाएगी। कृषि भूमि के क्षरण को रोकने के लिए जैविक खेती और मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएगा। किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए ऋण सुविधाओं को और अधिक सुलभ और सरल बनाया जाएगा। किसानों को बाजार में उचित मूल्य दिलाने के लिए कृषि विपणन सुधार और मूल्य स्थिरता के उपाय किए जाएंगे। इसके अलावा, कृषि में नवाचार और तकनीकी उन्नति को प्रोत्साहित करने के लिए निवेश बढ़ाया जाएगा।

भविष्य के शोध के लिए कुछ दिशा-निर्देश प्रस्तावित हैं। जलवायु परिवर्तन और इसके कृषि उत्पादन पर प्रभाव का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा, ताकि इसके समाधान के लिए ठोस रणनीतियाँ विकसित की जा सकें। कृषि भूमि के उपयोग और उसके संरक्षण के उपायों पर शोध किया जाएगा। किसानों की आर्थिक स्थिति और आत्महत्याओं के कारणों का गहन विश्लेषण किया जाएगा, ताकि इसके समाधान के लिए प्रभावी नीतियाँ बनाई जा सकें। कृषि विपणन सुधार और मूल्य स्थिरता के उपायों का प्रभावी ढंग से मूल्यांकन किया जाएगा, ताकि किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य मिल सके। इस प्रकार, कृषि के विभिन्न घटकों पर ध्यान केंद्रित कर, उनके सुधार के लिए ठोस नीतियाँ और उपाय अपनाए जाएंगे, जिससे भारतीय कृषि का सतत और समावेशी विकास संभव हो सके।

संदर्भ

1. सिंह, आर. (2018). भारतीय कृषि में हरित क्रांति का प्रभाव. कृषि विज्ञान पत्रिका.
2. शर्मा, ए., & मिश्रा, पी. (2020). जलवायु परिवर्तन और भारतीय कृषि. पर्यावरण अध्ययन पत्रिका.
3. गुप्ता, एस. (2019). उन्नत कृषि तकनीकें और उनकी उपयोगिता. जैविक कृषि पत्रिका.
4. राजन, के. (2021). भारतीय किसानों की आर्थिक स्थिति और आत्महत्याएँ. सामाजिक अध्ययन समीक्षा.
5. राष्ट्रीय जल विकास एजेंसी (NWDA) रिपोर्ट: भारतीय कृषि में सिंचाई की स्थिति, 2018-2019।
6. कृषि सांख्यिकी 2018-2019: भारत में उर्वरक और कीटनाशक उपयोग, कृषि मंत्रालय।
7. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) रिपोर्ट: उन्नत बीज और फसल प्रबंधन, 2018-2019।
8. कृषि मंत्रालय की 2019-2020 की रिपोर्ट: भारत में कृषि यंत्र और तकनीकी प्रगति, कृषि मंत्रालय।
9. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO) के आँकड़े: कृषि में जल प्रबंधन, NSSO, 2019।
10. विश्व बैंक और FAO रिपोर्ट: भारत में कृषि विकास, विश्व बैंक, 2018।
11. राष्ट्रीय कृषि नीति दस्तावेज, 2000: भारत सरकार, कृषि मंत्रालय।
12. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना (PM-KISAN): भारत सरकार, कृषि मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट।
13. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY): कृषि बीमा कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट।
14. मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना: भारत सरकार, कृषि मंत्रालय।
15. पर ड्रॉप मोर क्रॉप योजना: भारत सरकार, कृषि मंत्रालय।

16. कृषि सुधार कानून, 2020: भारत सरकार, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय।
17. भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD): भारत में जलवायु परिवर्तन और इसका कृषि पर प्रभाव, 2020।
18. पर्यावरण अध्ययन रिपोर्ट: जलवायु परिवर्तन और भारतीय कृषि, पर्यावरण और वन मंत्रालय, 2019।
19. भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI): भारतीय कृषि भूमि का क्षरण, 2018।
20. कृषि मंत्रालय: भारत में भूमि उपयोग और कृषि विकास, 2019।
21. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB): किसान आत्महत्याएँ और कृषि संकट, 2020।
22. समाचार लेख: किसानों की आत्महत्याएँ: आर्थिक संकट और समाधान, द हिंदू, 2021।
23. भारतीय कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA): भारतीय कृषि उत्पादों का विपणन और मूल्य स्थिरता, 2019।
24. व्यापार और उद्योग संगठन: भारतीय कृषि विपणन: चुनौतियाँ और समाधान, फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (FICCI), 2020।
25. कृषि मंत्रालय की रिपोर्ट: भारतीय कृषि सांख्यिकी 2019-2020, भारत सरकार।
26. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) रिपोर्ट: उन्नत बीज और तकनीकों का प्रभाव, 2020।
27. APEDA रिपोर्ट: भारतीय कृषि उत्पादों का निर्यात 2019-2020, भारतीय कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण।
28. वाणिज्य मंत्रालय की रिपोर्ट: भारत का कृषि आयात 2019-2020, भारत सरकार।
29. केंद्रीय बजट दस्तावेज: केंद्रीय बजट 2020-2021, भारत सरकार।
30. कृषि मंत्रालय की रिपोर्ट: कृषि में बुनियादी ढांचा कोष और अन्य योजनाएँ, 2020।
31. भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) रिपोर्ट: कृषि ऋण वितरण 2019-2020, RBI।
32. नाबार्ड रिपोर्ट: भारतीय कृषि ऋण और सब्सिडी, 2020।